प्रश्नः समाजवाद के अर्थ, विकास और विभिन्न राजनीति क प्रणालियों पर इसके प्रभाव की चर्चा कीजिए।

1. समाजवाद का अर्थ एवं मूल अवधारणा

समाजवाद उस विचारधारा को कहा जाता है जो निजी स्वामित्व (Private Ownership) के स्थान पर सामूहिक या सामाजिक स्वामित्व (Social Ownership) का समर्थन करती है। इसका मूल मंत्र है— "उत्पादन और वितरण के साधनों पर पूरे समाज का नियंत्रण होना चाहिए ताकि लाभ का बँटवारा न्यायसंगत हो।"

प्रसिद्ध राजनीति विज्ञानी **सी.ई.एम. जोड (C.E.M. Joad)** ने समाजवाद की विविधता पर टिप्पणी करते हुए इसे *"एक ऐसी टोपी कहा है जिसका आकार बिगड़ गया है क्योंकि उसे हर कोई पहनता है।"* इसका अर्थ यह है कि समाजवाद के इतने रूप (मार्क्सवाद, फेबियनवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद) विकसित हो गए हैं कि इसकी एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है। फिर भी, इसके मूल में सहयोग, समानता और शोषणविहीन समाज की कल्पना निहित है।

2. समाजवाद का ऐतिहासिक विकास (Evolutionary Trajectory)

समाजवाद का विकास क्रमिक रहा है, जिसे मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) कल्पनालोकीय समाजवाद (Utopian Socialism)

प्रारंभिक समाजवादी विचारक जैसे **सेंट साइमन, चार्ल्स फूरियर और रॉबर्ट ओवेन** ने औद्योगिक क्रांति के दुष्प्रभावों को देखते हुए एक आदर्श समाज की कल्पना की थी। ये विचारक नैतिक आधार पर परिवर्तन चाहते थे और पूंजीपतियों के हृदय परिवर्तन में विश्वास रखते थे। कार्ल मार्क्स ने इन्हें 'कल्पनालोकीय' कहा क्योंकि इनके पास इस परिवर्तन को प्राप्त करने का कोई वैज्ञानिक आधार या क्रांतिकारी मार्ग नहीं था।

(ख) वैज्ञानिक समाजवाद (Scientific Socialism)

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने समाजवाद को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। मार्क्स ने तर्क दिया कि समाज का इतिहास 'वर्ग संघर्ष' (Class Struggle) का इतिहास है। उन्होंने **'ऐतिहासिक भौतिकवाद'** के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि पूंजीवाद का पतन अनिवार्य है और इसके बाद सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के माध्यम से समाजवाद की स्थापना होगी। मार्क्स के लिए समाजवाद, साम्यवाद (Communism) की ओर जाने वाली एक

संक्रमणकालीन अवस्था है।

(ग) लोकतांत्रिक और विकासात्मक समाजवाद (Democratic & Evolutionary Socialism)

20वीं शताब्दी में ब्रिटेन के **फेबियन समाजवादियों (एडवर्ड बर्नस्टीन, सिडनी वेब)** ने मार्क्स के 'क्रांति' के विचार को नकार दिया। उन्होंने तर्क दिया कि समाजवाद हिंसा के बजाय संवैधानिक और लोकतांत्रिक माध्यमों से, धीरे-धीरे (Gradualism) लाया जाना चाहिए। यही विचार आधुनिक 'सोशल डेमोक्रेसी' का आधार बना।

3. विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों पर समाजवाद का प्रभाव

समाजवाद ने विश्व की राजनीतिक प्रणालियों को अलग-अलग रूपों में आकार दिया है:

प्रणाली का प्रकार	प्रभाव का स्वरूप	मुख्य उदाहरण
सर्वाधिकारवादी प्रणाली	यहाँ राज्य का अर्थव्यवस्था और नागरिक जीवन पर पूर्ण नियंत्रण होता है। निजी संपत्ति का पूरी तरह लोप हो जाता है।	पूर्व सोवियत संघ (USSR), चीन, क्यूबा।
सोशल डेमोक्रेसी (नॉर्डिक मॉडल)	यहाँ पूंजीवाद और समाजवाद का सफल मिश्रण है। बाजार अर्थव्यवस्था के साथ-साथ उच्च स्तर की सामाजिक सुरक्षा और लोक-कल्याण।	स्वीडन, नॉर्वे, डेनमार्क, फिनलैंड।
मिश्रित अर्थव्यवस्था (विकासशील देश)	औपनिवेशिक शासन से मुक्त हुए देशों ने योजनाबद्ध विकास और सार्वजनिक क्षेत्र को महत्व दिया।	भारत (नेहरूवादी समाजवाद), मिस्र।

4. आलोचनात्मक विश्लेषण:

समाजवाद के व्यावहारिक कार्यान्वयन को लेकर विद्वानों में गहरे मतभेद रहे हैं:

- **आर्थिक कुशलता का प्रश्न:** उदारवादी विचारक **फ्रेडरिक हायेक (Friedrich Hayek)** ने अपनी पुस्तक *"The Road to Serfdom"* में तर्क दिया कि राज्य के नियंत्रण वाली अर्थव्यवस्था अंततः तानाशाही की ओर ले जाती है और आर्थिक नवाचार (Innovation) को समाप्त कर देती है। उनके अनुसार, प्रतिस्पर्धा के बिना उत्पादन की गुणवत्ता गिर जाती है।
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता:** आलोचकों का मानना है कि 'समानता' लाने के प्रयास में राज्य इतना शक्तिशाली हो जाता है कि व्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोंट दिया जाता है। सोवियत संघ का पतन इस बात का प्रमाण माना जाता है कि बिना राजनीतिक स्वतंत्रता के आर्थिक समानता स्थायी नहीं रह सकती।
- **अधिकारों का विरोधाभास:** जहाँ समाजवाद 'आर्थिक अधिकारों' (काम का अधिकार, भोजन का अधिकार) की बात करता है, वहीं अक्सर 'नागरिक अधिकारों' (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता) को सीमित कर देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, समाजवाद का महत्व उसके 'पूर्ण राज्य नियंत्रण' के विचार में नहीं, बल्कि उसके 'मानवीय सरोकारों' में है। आज विशुद्ध मार्क्सवादी समाजवाद भले ही संकट में हो, किंतु उसका 'कल्याणकारी' स्वरूप पूरी दुनिया की सरकारों की नीतियों में समाहित है। **हेरोल्ड लास्की (Harold Laski)** के शब्दों में, समाजवाद ने हमें यह सिखाया है कि *"संपत्ति की स्वतंत्रता, भूखे और नग्न व्यक्तियों के लिए एक क्रूर मजाक है।"* अतः, 21वीं सदी का समाजवाद 'बाजार की कुशलता' और 'सामाजिक सुरक्षा' के बीच एक संतुलन साधने का प्रयास है।